5

दशोरा परिवारों का मेवाड़ में आगमन एवं सम्मान

(इतिहास के पन्नो में)

मन्दसोर से विस्थापित ये दशोरा ब्राह्मण परिवार अपनी विद्वता तथा वैद्यकगिरी में निपुण थे। इनकी विद्वता से प्रभावित होकर मेवाड़ के विभिन्न महाराणाओं ने उनको यथोचित सम्मान दिया तथा इनको जागीरें, जमीन आदि देकर यहाँ इनकी स्थाई रूप से व्यवस्था की जिसे ये सन् 1958 ई. तक भोगते रहे। सन् 1958 में इन जागीरों का पुनर्ग्रहण हो जाने से ये फिर अपने स्वतन्त्र व्यवसाय मे लग गये। इनका संक्षिप्त विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

क्र. सं.	वि.सं. व सन्	प्रमुख घटनाएँ
1.	1362 (सन् 1305 ई.)	मन्दसोर से पलायन कर सर्वप्रथम बसन्तराय–सोमनाथ तथा भट्ट विष्णु एवं धनेश्वराय के पूर्वज मेवाड़ में आये व चित्तौड़ में आकर बसे।
2.	–	बसंतराय के पुत्र नरहरि, नरहरि के झोटिंग भट्ट, झोटिंग भट्ट के अत्रि तथा अत्रि के लड़के महेश्वर भट्ट थे। ये सभी उद्भट विद्वान, दर्शन शास्त्रों के ज्ञाता, वेद विद्या में निपुण, शास्त्यार्थ निपुण, श्रेष्ठ कवि तथा श्रेष्ठ प्रशस्तिकार थे।
3.	1450 (सन् 1393 ई.)	झोटिंग भट्ट की विद्वता से प्रभावित होकर महाराणा लाखा ने इनको चित्तौड़ के पास 'पीपली' गाँव जागीर में दिया।
4.	1450 (सन् 1393 ई.)	इसी समय माहाराणा लाखा ने भट्ट धनेश्वराय को चित्तौड़ के पास 'पंच देवला' गाँव जागीर में दिया।
5.	1485 (सन् 1428 ई.)	महाराणा मोकल ने चित्तौड़ किले पर समिद्धेश्वर मंदिर का निर्माण कराया जिसकी प्रशस्ति भट्ट विष्णु के पुत्र एकनाथ ने लिखी।
6.	1505 (सन् 1448 ई.)	महाराणा कुंभा ने चित्तौड़ किले पर वि.सं. 1497 (सन् 1440 ई.) में कीर्तिस्तंभ का निर्माण आरंभ किया जो वि.सं. 1505 (सन् 1448 ई.) में पूर्ण हुआ।
7.	1517 (सन् 1460 ई.)	इस कीर्ति स्तंभ की प्रशस्ति की रचना वि.सं. 1505 (सन् 1448 ई.) कों झोटिंग भट्ट ने आरंभ की थी। इसका पूर्वार्द्ध इनके पुत्र अत्रि ने वि.सं. 1510 (सन्

क्रं सं.	वि.सं. व सन्	प्रमुख घटनाएँ
		1453 ई.) में लिखा जिसे अत्रि के पुत्र महेश्वर भट्ट ने वि.सं. 1517 (सन् 1460 ई.) में पूर्ण किया।
8.	1517 (सन् 1460 ई.)	महाराणा कुंभा ने महेश्वर भट्ट को दो हाथी, सोने की डंडी के दो चंवर और श्वेत छत्र प्रदान कर इन्हें सम्मानित किया।
9.	1525 (सन् 1468 ई.)	भोगीदास जी का एक परिवार मेवाड़ में आकर बसा।
10.	1541 (सन् 1484 ई.)	महेश्वर भट्ट ने रामपुरा (म.प्र.) के पास खड़ावदा गाँव की बावड़ी की प्रशस्ति लिखी।
11.	1542 (सन् 1485 ई.)	महेश्वर भट्ट ने जावर में रमानाथ जी मंदिर की प्रशस्ति लिखी।
12.	1544 (सन् 1487 ई.)	महेश्वर भट्ट ने कुंभलगढ़ में कुंभ स्वामी मंदिर मामादेव की प्रशस्ति लिखी।
13.	1545 (सन् 1488 ई.)	महेश्वर भट्ट ने एकलिंग जी मंदिर के दक्षिण द्वार की प्रशस्ति की रचना की।
14.	1545 (सन् 1488 ई.)	महेश्वर भट्ट को महाराणा रायमल जी ने डूमखेड़ा गाँव जागीर में दिया।
15.	1552 (सन् 1495 ई.)	महेश्वर भट्ट को महाराणा रायमल जी ने पीपली के बजाय सांवता व घाघसा गाँव जागीर में दिया।
16.	1552 (सन् 1495 ई.)	भोगीदास जी को महाराणा रायमल जी ने अरण्या गाँव जागीर में दिया।
17.	1552 (सन् 1495 ई.)	भास्कर जी को महाराणा रायमल जी ने बेठूम्बी गाँव जागीर में दिया।
18.	1561 (सन् 1504 ई.)	महेश्वर भट्ट ने घोसुण्डी की बावड़ी की प्रशस्ति लिखी।
19.	1575 (सन् 1518 ई.)	गंगा जी का एक परिवार महाराणा संग्राम सिंह जी (सांगा) के समय मेवाड़ में आकर बस गया था। अज्जा एवं सज्जा के साथ–घांगघ्रा (गुजरात से)
20.	1582 (सन् 1525 ई.)	कोमल जी–वेणीदासजी को महाराणा संग्राम सिंह जी (सांगा) ने घोसुण्डी गाँव जागीर में दिया।

क्रं सं.	वि.सं. व सन्	प्रमुख घटनाएँ
21.	1592 (सन् 1535 ई.)	भट्ट पुरूषोत्तम ने एकलिंग जी मंदिर के मठ की प्रशस्ति लिखी। इस समय महाराणा विक्रमादित्य का शासन था। ये महेश्वर भट्ट के पुत्र थे।
22.	1664 (सन् 1607 ई.)	सांवल दास जी का एक परिचय मेवाड़ में आया। महाराणा अमरसिंह जी ने इनको पंचदेवला गाँव जागीर में दिया जो पहले घनेश्वराय के वंशजों के पास था।
23.	1664 (सन् 1607 ई.)	जगराम–पेमा व भेरू मोडा के दो परिवार मेवाड़ में आये थे।
24.	1702 (सन् 1645 ई.)	जगराम – पेमा व भेरूँ मोड़ा को महाराणा जगतसिंह जी ने गोयत का आधा आधा गाँव जागीर में दिया।
25.	1700 (सन् 1643 ई.)	वृन्दावन लाल जी का एक परिवार मेवाड़ में आया था।
26.	1729 (सन् 1672 ई.)	वृन्दावन लाल जी को महाराणा राजसिंह जी ने भावली में जमीन दी।
26A.	1730 (सन् 1673 ई.)	धनंजय गोत्र का एक परिवार महाराणा राजसिंह जी के समय उदयपुर में आकर बस गया।
27.	1740 (सन् 1683 ई.)	वृन्दावन लाल जी को महाराणा जयसिंह जी ने कानपुर में जमीन दी।
28.	1742 (सन् 1685 ई.)	वृन्दावन लाल जी को महाराणा जयसिंह जी ने पीपली अहीरान में जमीन दी।
29.	1749 (सन् 1692 ई.)	वृन्दावन लाल जी को महाराणा अमर सिंह जी (द्वितीय) ने कंवरपदा में मालीखेड़ा गाँव जागीर में दिया। साथ ही कुरज की सरहद में 617 बीघा का बीड़ तथा सकरावास मे भी जमीन दी।
30.	1750 (सन् 1693 ई.)	वृन्दावन लाल जी को महाराणा अमर सिंह (द्वितीय) ने बांगरेड़ा में कुछ जमीन जागीर में दी। साथ ही इन्हीं ने कँवरपदा में कणूकड़ा में कुछ जमीन दी।
31.	1762 (सन् 1705 ई.)	वृन्दावन लाल जी को महाराणा अमर सिंह जी (द्वितीय) ने दलों का खेड़ा में जमीन दी तथा कुंडाल में बरखेड़ा में जमीन दी।

क्र. सं.	वि.सं. व सन्	प्रमुख घटनाएँ
32.	1764 (सन् 1707 ई.)	देवाजी का एक परिवार देंतली से आकर देलवाड़े में बस गया था।
33.	1765 (सन् 1708 ई.)	वृन्दावन लाल जी के पुत्र प्रभाकर जी को महाराणा अमर सिंह जी (द्वितीय) ने उदयपुर में दशोरों की गली में मकान बनाने हेतु जमीन दी जिसे 'मिश्रो की गवाड़ी' कहते थे।
34.	–	नन्दलाल जी, धन्ना लाल जी तथा बृज किशोर जी के तीन परिवार गोयत में आकर बस गये थे। ये कब आये यह ज्ञात न हो सका।
35.	1781 (सन् 1724 ई.)	जैराम जी का एक परिवार भुवाणा में आकर बस गया था।
36.	1856 (सन् 1799 ई.)	टेकचन्द जी, माणक लाल जी तथा सवदास जी के तीन परिवार डूँगरपुर से उदयपुर में आकर बस गये थे। ये परिवार राजकोट से डूँगरपुर आये थे। ये महाराणा भीमसिंह जी के समय आये थे।
37.	1868 (सन् 1811 ई.)	महाराणा भीमसिंह जी के समय मेवाड़ में काफी दंगे हुए थे। इसमें कईयों के ताम्रपत्र खो गये तथा डूमखेड़ा के दशोरा परिवार उज्जैन, झाड़ोल, सलूम्बर, मोहणा तथा लाड़पुरा जाकर बस गये।
38.	1876 (सन् 1819 ई.)	ये दंगे समाप्त हुए।
39.	1876 (सन् 1819 ई.)	महाराज कुँवर जवानसिंह जी ने कंवरपदा में डूंमखेड़ा का पट्टा धाभाई जी देवजी को दे दिया।
40.	1877 (सन् 1820 ई.)	घोसुण्डी के दशोरों को महाराणा भीमसिंह जी ने संग्रामपुरा गांव जागीर में दिया।
41.	1881 (सन् 1824 ई.)	जै राम जी के परिवार में दीपा जी को महाराणा भीमसिंह जी ने सुखेर व भुवाणा में तथा ताराचंद जी को सोभागपुरा में जमीन दी।
42.	1889 (सन् 1832 ई.)	डूमखेड़ा के जो दशोरा परिवार उज्जैन गये थे उनको महाराणा जवानसिंह जी ने वापस बुलाया तथा अमरेश्वर जी व इन्द्रदत्त जी को उदयपुर में मकान दिया।

क्र. सं.	वि.सं. व सन्	प्रमुख घटनाएँ
43.	1891 (सन् 1834 ई.)	घाघसे का ताम्रपत्र दंगे में खो जाने से महाराणा जवानसिंह जी ने नया बनाकर दिया।
44.	1894 (सन् 1837 ई.)	उज्जैन से आये इन दशोरा परिवारों को बरणाई में जमीन दी, जवानसिंह जी ने।
45.	1900 (सन् 1843 ई.)	छोटू जी का एक परिवार भानपुरा से मेवाड़ में आकर बस गया।
46.	1905 (सन् 1848 ई.)	कोटेश्वर जी ने उदयपुर के जगत शिरोमणि मंदिर की प्रशस्ति लिखी जिसका निर्माण महाराणा स्वरूप सिंह जी ने कराया था।
47.	1915 (सन् 1858 ई.)	मुकुन्ददत्त जी को महाराणा स्वरूप सिंह जी ने बांगेड़ा में जमीन दी।
48.	1916 (सन् 1853 ई.)	मुकुन्ददत्त जी को महाराणा स्वरूप सिंह जी ने सालोदा में जमीन दी।
49.	1916 (सन् 1859 ई.)	गोयत का ताम्रपत्र दंगे में खो जाने से महाराणा स्वरूप सिंह जी ने नया बनाकर दिया।
50.	1925 (सन् 1868 ई.)	सीताराम जी का एक परिवार देवास (म.प्र.) से उदयपुर में आकर बस गया।
50A.	1928 (सन् 1871 ई.)	मुकुन्ददत्त जी को महाराणा शंभूसिंह जी ने डूमखेड़ा में जमीन दी।
51.	1929 (सन् 1872 ई.)	सीताराम जी को महाराणा शंभूसिंह जी ने अमरख जी में जमीन दी।
52.	–	देवीलाल जी का एक परिवार जालखेड़ा में आकर बस गया।
53.	–	नावली (म.प्र.) के कुछ परिवार मेवाड़ में आकर बस गये।
54.	1960 (सन् 1903 ई.)	दुर्लभरामजी ने 'वीर विनोद' नामक इतिहास लिखने मे श्याम दास जी की सहायता की।

(नोट :– इसका विस्तृत विवरण नन्द लाल दशोरा की पुस्तक 'दशोरा जाति–इतिहास एवं परिचय' में दिया गया है।)